गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः (गुरु वन्दना)

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः (गुरु वन्दना)

प्रकार	प्रार्थना
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	गुरु गीता (परम्परानुसार स्कन्द पुराण का अंश) — Guru Gita (traditionally part of the Skanda Purana)
आभार	पारम्परिक; सार्वजनिक।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

gururbrahmā gururviṣṇuḥ gururdevo maheśvaraḥ |

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

guruḥ sākṣāt parabrahma tasmai śrīgurave namaḥ ||

अर्थ

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महेश्वर हैं; गुरु साक्षात् परब्रह्म हैं — उन श्रीगुरु को नमस्कार।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।